

Q.4. पूर्ण प्रतियोगिता से आप क्या समझते हैं ? पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य का निर्धारण किस प्रकार होता है ? (What is Perfect Competition? How is price determined under Perfect Competition ?)

Or, मूल्य न तो केवल माँग और न केवल पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है वरन् यह दोनों की पारस्परिक अंतःक्रियाओं द्वारा निर्धारित होता है।" विवेचना करें।

("Price is determined neither by demand nor by supply but by an interaction of the two." Discuss.)

Ans. पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह दशा होती है जिसमें किसी वस्तु के असंख्य क्रेता एवं विक्रेता होते हैं तथा वे समरूप वस्तु का उत्पादन करते हैं। पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में असंख्य उत्पादक होने से एक उत्पादक का वस्तु की पूर्ति में नगण्य भाग होता है। एक उत्पादक वस्तु की पूर्ति को कम या अधिक करके मूल्य को प्रभावित करने की स्थिति में नहीं होता है। वस्तु का मूल्य बाजार की माँग व पूर्ति की दशाओं द्वारा उद्योग निर्धारित करता है। एक व्यक्तिगत फर्म को उद्योग द्वारा निर्धारित मूल्य पर ही वस्तु को बेचना पड़ता है। फर्म अपनी क्षमता एवं लागत दशाओं के अनुसार इस मूल्य पर उत्पादन मात्रा का निर्धारण करती है जो उद्योग मूल्य निर्धारक होता है तथा फर्म मूल्य ग्रहणकर्ता होती है। बाजार की सम्पूर्ण पूर्ति में उसका भाग समुद्र में एक बून्द के समाना होता है। फर्म का माँग वक्र पूर्णतया लोचदार होता है अर्थात् वह उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत पर चाहे जितना माल बेच सकती है, किन्तु वह कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती है। फर्म का माँग वक्र, औसत आगम वक्र एवं सीमान्त आगम वक्र क्षैतिजीय होते हैं।

प्रो. लैफ्टविच के अनुसार, "पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति है जिसमें बहुत सी फर्मों एक समान वस्तुएँ बेचती हैं और इनमें से किसी भी फर्म की यह स्थिति नहीं होती है कि वह बाजार कीमत को प्रभावित कर सके।"

श्रीमती रॉबिन्सन के अनुसार, "जब प्रत्येक उत्पादक की वस्तु की माँग पूर्णतः लोचदार होती है तो वह बाजार पूर्ण प्रतियोगिता बाजार कहलाता है।"

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य-निर्धारण

(Price Determination Under Perfect Competition)

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य-निर्धारण के सम्बन्ध में निम्नलिखित तीन सिद्धांत दिये गये हैं-

(i) **मूल्य का उत्पादन-लागत सिद्धांत (Cost of Production Theory of Value)-** इस सिद्धांत के प्रतिपादक रिकार्डो (Ricardo), मिल (Mill) जैसे प्राचीन अर्थशास्त्री हैं। उनके अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत कोई भी उत्पादक अपनी वस्तु का मूल्य उसके उत्पादन-व्यय के बराबर रहता है। लेकिन मूल्य-निर्धारण का यह सिद्धांत एकपक्षीय है क्योंकि इसमें केवल पूर्ति-पक्ष पर विचार किया गया है और माँग-पक्ष की अवहेलना की गई है।

(ii) **मूल्य का सीमांत उपयोगिता सिद्धांत (Marginal Utility Theory of Value)-** इस सिद्धांत के मुख्य प्रतिपादक जेवन्स (Jevons) हैं। उनके अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में कोई भी उपभोक्ता या क्रेता किसी वस्तु के लिये अधिक-से-अधिक उसकी सीमांत उपयोगिता के बराबर मूल्य देने को तैयार रहता है। लेकिन यह सिद्धांत भी एकपक्षीय है क्योंकि इसमें केवल माँग-पक्ष पर ध्यान दिया गया है और पूर्ति-पक्ष की अवहेलना की गई है।

(iii) **मूल्य का सामान्य सिद्धांत (General Theory of Value)-** मूल्य-निर्धारण के सामान्य सिद्धांत के प्रतिपादन का क्षेत्र प्रो० Marshall को है। हम देख चुके हैं कि उपरोक्त दोनों सिद्धांत एकपक्षीय हैं। उनमें से किसी को भी मूल्य-निर्धारण का सही सिद्धांत

नहीं माना जा सकता। प्रो० मार्शल ने इन दोनों सिद्धांतों का सामन्वय कर मूल्य-निर्धारण का सही सिद्धांत दिया है जिसे मूल्य-निर्धारण का सामान्य सिद्धांत कहते हैं। प्रो० मार्शल के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में किसी वस्तु का मूल्य न तो केवल पूर्ति अथवा उत्पादन-व्यय के द्वारा निर्धारित होता है और न केवल माँग या सीमांत उपयोगिता के द्वारा निर्धारित होता है, वरन् मूल्य माँग एवं पूर्ति की सापेक्षित शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है। दूसरे शब्दों में, पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य-निर्धारण में माँग एवं पूर्ति (Demand and Supply) दोनों का हाथ रहता है। प्रो० मार्शल (Marshall) के अनुसार, "मूल्य, न तो केवल माँग और न केवल पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है वरन् दोनों की पारस्परिक अंतर्क्रियाओं द्वारा निर्धारित होता है।" (Price is determined neither by demand nor by supply alone but by an interaction of the two.)

प्रो० मार्शल ने एक उदाहरण द्वारा पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य-निर्धारण की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है। उनके अनुसार जिस प्रकार कपड़े के टुकड़े को काटने के लिए कैंची के दोनों फलों (blades) की आवश्यकता पड़ती है ठीक उसी प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य को निर्धारित करने के लिये माँग एवं पूर्ति दोनों का महत्व है। हम यह नहीं कह सकते हैं कि कपड़े का टुकड़ा कैंची का ऊपरी फल काटता है अथवा निचला फल, बल्कि दोनों के सहयोग से कपड़ा कटता है। उसी प्रकार मूल्य का निर्धारण न तो केवल माँग और न केवल पूर्ति द्वारा होता है वरन् माँग एवं पूर्ति की सापेक्षित शक्तियों द्वारा ही मूल्य का निर्धारण होता है।

इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में जिस बिन्दु पर वस्तु की माँग एवं पूर्ति एक-दूसरे के बराबर हो जाती है उसी बिन्दु पर मूल्य का निर्धारण होता है। इस बिन्दु को संतुलन बिन्दु (Equilibrium point) तथा उस पर निर्धारित मूल्य को संतुलन मूल्य (Equilibrium price) कहते हैं।

माँग एवं पूर्ति का संतुलन- पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत माँग एवं पूर्ति के संतुलन द्वारा मूल्य का निर्धारण होता है। क्रेता किसी वस्तु के लिये सीमांत उपयोगिता से अधिक मूल्य देने को तैयार नहीं होता क्योंकि उसके लिये सीमांत उपयोगिता मूल्य की अधिकतम सीमा होती है। दूसरी ओर विक्रेता किसी वस्तु के लिये कम-से-कम उसके उत्पादन-व्यय के बराबर मूल्य लेना चाहता है क्योंकि उसके लिये उत्पादन-व्यय मूल्य की अधिकतम सीमा है। मूल्य की इन अधिकतम एवं न्यूनतम सीमाओं के बीच ही क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच मेल-जोल के द्वारा मूल्य का निर्धारण होता है। यदि क्रेता पक्ष अधिक शक्तिशाली होता है तो मूल्य न्यूनतम सीमा के करीब होगा और यदि विक्रेता पक्ष अधिक शक्तिशाली हुआ तो मूल्य अधिकतम सीमा के समीप होता है।

इस प्रकार मेल-जोल के फलस्वरूप किसी वस्तु का मूल्य अधिकतम एवं न्यूनतम सीमाओं के बीच थले ही कुछ देर के लिये चढ़ता-उतरता रहे लेकिन पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में वस्तु का स्थायी एवं साम्य मूल्य उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ माँग एवं पूर्ति एक-दूसरे के बराबर हो जाती हैं। इसे निम्नांकित तालिका से स्पष्ट किया गया है-

मूल्य प्रति कलम	कलम की माँग	कलम पूर्ति
12 रुपये	100	500
10 रुपये	200	400
8 रुपये	300	300
6 रुपये	400	200
4 रुपये	500	100

इस तालिका से स्पष्ट है कि जब कलम का मूल्य प्रति कलम 12 रुपये है तो क्रेता 100 कलमों की माँग करते हैं लेकिन विक्रेता 500 कलमों की पूर्ति करने को तैयार है। अतः इस मूल्य पर सभी विक्रेता अपने कलमों को बेचने में सफल नहीं होंगे क्योंकि पूर्ति माँग से अधिक होगी। अतः विक्रेताओं को अपने मूल्य में कमी करनी पड़ेगी। जब मूल्य घटकर 10 रुपये प्रति कलम हो जाता है तो माँग बढ़कर 200 तथा पूर्ति घटकर 400 हो जाती है लेकिन अभी भी पूर्ति माँग से अधिक है, अतः विक्रेताओं को मूल्य में और भी कमी करनी पड़ेगी। जब मूल्य 8 रुपये प्रति कलम हो जाता है तो कलम की माँग एवं पूर्ति दोनों 300 हो जाती है। अर्थात् इस मूल्य पर माँग एवं पूर्ति दोनों एक-दूसरे के बराबर हो जाती है। अतः बाजार में यही संतुलन मूल्य होगा। दूसरे शब्दों में, पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत बाजार में कलम का मूल्य 8 रुपये प्रति कलम निश्चित होगा। बाजार में मूल्य 6 रुपये प्रति कलम निश्चित नहीं हो सकता क्योंकि इस मूल्य पर पूर्ति की अपेक्षा माँग अधिक होगी एवं मूल्य में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी जायेगी। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत किसी वस्तु का मूल्य उसी बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ वस्तु की माँग एवं पूर्ति एक-दूसरे के बराबर हो जाती है।

रेखा-चित्र द्वारा स्पष्टीकरण- पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य के निर्धारण को हम एक रेखा-चित्र द्वारा भी स्पष्ट कर सकते हैं। हम जानते हैं कि माँग की रेखा (Demand Curve) ऊपर से नीचे की ओर गिरती है तथा पूर्ति की रेखा (Supply Curve) नीचे से ऊपर की ओर जाती है। निम्नांकित चित्र में माँग एवं पूर्ति की रेखाओं से संतुलन द्वारा पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मूल्य-निर्धारण दिखलाया गया है-

OX पर हम सेवाओं की मात्रा और OY पर सेवाओं की कीमत मापते हैं। DD_1 सेवाओं की माँग वक्र है और SS_1 उनका पूर्ति वक्र है।

रेखाचित्र से स्पष्ट है कि बाजार में कीमत OP निर्धारित होगी क्योंकि इसी कीमत पर माँग और पूर्ति बराबर है जैसे $OM = OM$ अथवा $PE = PE$

OP_1 कीमत निर्धारित नहीं हो सकती क्योंकि इस कीमत पर सेवाओं की पूर्ति उनकी माँग से अधिक है जैसे $P_1L_1 > P_1L$

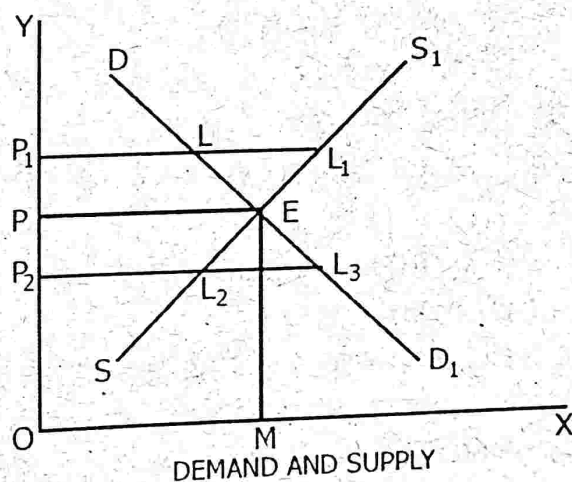
OP_2 भी कीमत निर्धारित नहीं हो सकती क्योंकि इस कीमत पर सेवाओं की माँग उनकी पूर्ति से अधिक है, जैसे $P_2L_3 > P_2L_2$

यदि पूर्ति उतनी ही रहे तो माँग के बढ़ने से कीमत बढ़ेगी और माँग के घटने से कीमत घटेगी। दूसरी ओर यदि माँग उतनी ही रहेगी तो पूर्ति के बढ़ने से कीमत घटेगी तथा पूर्ति के घटने से कीमत बढ़ेगी।

माँग वक्र स्थिर और पूर्ति वक्र में परिवर्तन

रेखाचित्र में माँग DD तो स्थिर रहती है जबकि पूर्ति वक्र में परिवर्तन होता है। जब पूर्ति वक्र SS था तो कीमत OP निर्धारित हुई। यदि पूर्ति वक्र बढ़कर S_1S_1 हो जाता है तो कीमत गिर कर OP_1 हो जाती है और यदि पूर्ति कम होकर पूर्ति वक्र S_2S_2 रह जाती है तो कीमत बढ़कर OP_2 हो जाती है।

अतः इस सिद्धांत को कीमत का सीमांत सिद्धांत (Marginal Theory of Value)



कहते हैं क्योंकि कीमत सीमांत उपयोगिता से बढ़ नहीं सकती और सीमांत लागत से घट नहीं सकती, अतः दोनों सीमाओं के बीच जहाँ माँग और पूर्ति दोनों बराबर हैं वहाँ कीमत निर्धारित होती है।

पूर्ति वक्र स्थिर और माँग वक्र में परिवर्तन

यदि पूर्ति वक्र पहले जैसा रहे और माँग वक्र बढ़े या घट जाय, तब कीमत किस तरह निर्धारित होगी, यह रेखाचित्र में दिखाया गया है-

रेखाचित्र में पूर्ति वक्र (SS) स्थिर है। जब माँग वक्र DD था तब कीमत OP थी। यदि माँग के बढ़ने से नया वक्र D_1D_1 हो तो कीमत बढ़कर OP_1 हो जाती है और माँग जब गिर कर D_2D_2 हो जाती है तो कीमत भी गिर कर OP_2 हो जाती है।

